प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट
दिल्ली-६.

अनुवादक
माईदयाल जैन

प्रथम संस्करण
नवम्बर, १९५६

मूल्य
दो रुपया

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल
दिल्ली.

रेत और झाग

मान्यताएं

इस पुस्तक की कहानी

खलील जिब्रान हिन्दी-जगत के लिए कोई अपरिचित विचारक, कवि और मनीषी नहीं हैं, उनकी कई पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। फिर भी उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय अलग दे दिया गया है। इस भूमिका में प्रस्तुत पुस्तक 'रेत और झाग' के रचे जाने की रोचक कहानी और समालोचकों की दृष्टि में इस पुस्तक का महत्त्व दिया जा रहा है, जो बिल्कुल नई बात है।

खलील जिब्रान की सैक्रेटरी श्रीमती बारबैरा यंग ने एक बार कवि से उनकी जीवनी या उनके प्रति श्रद्धांजलि लिखने की आज्ञा मांगी। जिब्रान ने आज्ञा देते हुए कहा, "यदि मैं आज रात को मर जाऊं, तो यह बात याद रखना··· ।" कवि को कोई कहानी या कुछ बात कहने से पहले भूमिका-रूप से एक-दो वाक्य सूत्र या सूक्ति के ढंग से कहने की आदत थी। और वे सूक्तियां, सुभाषित या कहावतें कागज के टुकड़ों, थियेटरों के कार्यक्रम के कागजों, सिगरेट की डिब्बियों के गत्तों, तथा फटे हुए लिफाफों पर लिखी हुई होती थीं, जिन्हें श्रीमती बारबैरा यंग इकट्ठी करने लगी। और तब कवि उससे कहते, "अच्छा, तुम अपने काम में लगी हो, रेत और झाग को मूर्खता से इकट्ठा कर रही हो ?" जिब्रान कभी-कभी अपनी सैक्रेटरी के द्वारा इन परचियों को इकट्ठा करने के काम का मजाक करते हुए कहा करते थे, "ये तो केवल रेत और झाग ही हैं।" इस सूक्ति-संग्रह का यही नाम रखा गया। और तब से ही जिब्रान

ने इस संग्रह की तैयारी में दिलचस्पी लेनी आरम्भ कर दी। वह इस काम में खूब आनन्द लेने लगे और फिर नई-नई कहावतें बनाने लगे। इनमें से कुछ सूक्तियां जिब्रान की पहले कही या लिखी हुई प्रभावशाली सूक्तियों की टक्कर की हैं। एक दिन जिब्रान ने कहा, "कृपा करके यह लिखिए—और याद रखिए कि यह पुस्तक की अन्तिम कहावत होनी चाहिए—जिन विचारों को मैंने इन सूक्तियों में बन्द किया है, मुझे अपने कामों द्वारा उनको स्वतन्त्र करना है।" 'रेत और झाग' की यही अन्तिम सूक्ति है, और इससे प्रकट होता है कि कवि अपनी कथनी को करनी में लाने के कितने इच्छुक थे। इसी प्रकार कवि ने इस पुस्तक की पहली सूक्ति भी स्वयं विशेष रूप से लिखाई थी।

जब खलील जिब्रान को टाइप हुई पांडुलिपि दिखाई गई, तो उन्होंने देखकर विस्मयपूर्ण आकृति से पूछा, "क्या सचमुच मैंने ही यह सब कुछ रचा है या तुमने इन्हें बनाने में मेरी सहायता की है?" बारबैरा यंग ने उत्तर दिया, "मेरा एक भी शब्द नहीं है। और आप इसे जानते हैं। इन पंक्तियों में से हर एक पंक्ति जिब्रान है, वे और कोई नहीं हो सकतीं।"

टाइपलिपि प्रकाशक को दे दी गई और वह सन् १९२६ में प्रकाशित हुई। जिब्रान सदा इस पुस्तक को 'कहावतों की पुस्तिका' कहा करते थे।

श्रीमती बारबैरा यंग और दूसरे व्यक्तियों का मत है, "अंग्रेजी में इस पुस्तक के समान कहावतों की और दूसरी पुस्तक नहीं है। इस पुस्तक में ऊंचाई, गहराई और विशालता के ही तीन परिमाण (Three Dimensions) नहीं हैं, इसमें चौथा परिमाण समयहीनता (Timelessness) भी है, जो कि अनन्त या असीम का ही दूसरा नाम है।"

कवि की कुछ सूक्तियां देखिए—

सत्य को जानना तो सदा चाहिए, पर उसको कहना कभी-कभी चाहिए।

◇ ◇ ◇

सत्य को सुननेवाला सत्य बोलनेवाले से कुछ कम नहीं है।

◇ ◇ ◇

बहुत-से मत-मतान्तर खिड़की के शीशों के सदृश हैं। हम उनमें से सत्य को देखते तो हैं, पर वे हमें सत्य से अलग ही रखते हैं।

◇ ◇ ◇

जब तुम सूर्य की ओर पीठ फेर लेते हो, तब तुम अपनी परछाईं के सिवा और क्या देख सकते हो?

◇ ◇ ◇

दानशीलता यह नहीं है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता मुझे तुमसे अधिक है, वरन् यह है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता तुम्हें मुझसे अधिक है।

◇ ◇ ◇

जो आदमी भलाई को बुराई से अलग करनेवाली रेखा पर अंगुली रख सकता है, निस्सन्देह वही आदमी परमात्मा के चरणों को छू सकता है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम्हारे हृदय में ज्वालामुखी धधक रहा है, तो तुम अपने हाथों में फूलों के खिलने की आशा कैसे कर सकते हो?

◇ ◇ ◇

कवि की अपराध की परिभाषा देखिए—

अपराध क्या है? या तो वह आवश्यकता का दूसरा नाम है या किसी बुराई का लक्षण।

बदले हुए युग में निर्धनों के महत्व को बताते हुए जिब्रान कहते हैं—

प्राचीन काल में गुणी लोग राजाओं की सेवा करने में गौरव अनुभव करते थे।

पर आज वे निर्धनों की सेवा करने में सम्मान का दावा करते हैं।

ऐसी ही सुन्दर तथा अनमोल कहावतों से यह पुस्तक भरी पड़ी है। ये मोती और हीरों से भी अधिक मूल्यवान हैं। ये गांठ में बांधकर रखने योग्य हैं, जिससे समय पर काम आएं। इनमें उस विचारक के विचार हैं, जिसने जीवन की नाड़ी पर हाथ रखा है, और जिसने जीवन की थाली से खाना और प्याले से पानी पीया है, न कि उस आदमी के विचार हैं, जिसने जीवन को केवल देखा है और उसकी आलोचना की है। बारबैरा यंग के शब्दों में "जिब्रान ने इनमें वही काम किया है, जो कि उसने 'प्राफट' में किया था। जीवन और मृत्यु के बीच की बातों को हमें दिखाया है, पर इनके ढंग जरा भिन्न हैं।"

जिब्रान की इस श्रेष्ठ कृति का अनुवाद मैंने तेरह नवम्बर सन '४६ को दूसरी पुस्तकों के अनुवाद के साथ-साथ ही आरम्भ किया और पन्द्रह अक्तूबर सन १९५० को पूरा किया। इसके प्रकाशित होने पर मुझे खेद भी है और हर्ष भी। खेद इसलिए कि हिन्दी में छोटी से छोटी श्रेष्ठ कृति को भी प्रकाशित होने में इतना समय लगता है। और हर्ष इसलिए कि हिन्दी में गुण-ग्राहकता की कमी नहीं है। इस खेद और हर्ष के मेल का नाम ही जीवन है।

दिल्ली
एक अगस्त, '५६।

माईदयाल जैन
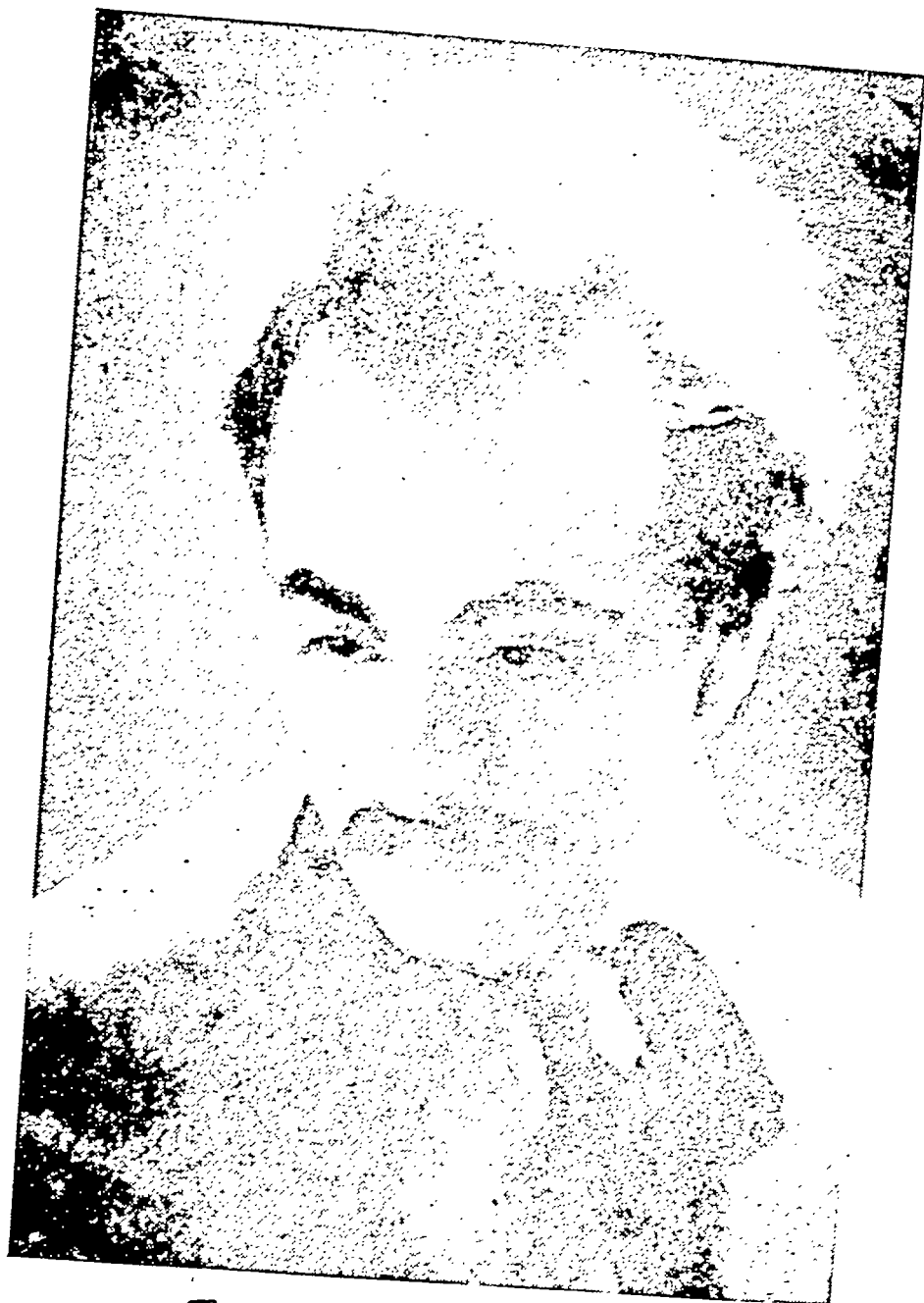
Kahlil Gibran

खलील जिब्रान : परिचय

संसार के महाकवियों की नामावलि में महाकवि खलील जिब्रान का नाम एक नई वृद्धि है। यद्यपि यह विश्व-विख्यात और अन्तर्राष्ट्रीय कवि थे, तो भी चूंकि इन्होंने एशिया के लेवनान देश को अपने जन्म से पवित्र किया था, इस नाते हम भारतवासी भी इन पर उचित गर्व कर सकते हैं।

इनका जन्म ६ जनवरी, १८८३ ई० को लेवनान के वशरी नगर में एक सम्पन्न और नामी ईसाई घर में हुआ था। इनकी मां का नाम कलीमा रहीमी था।

बारह वर्ष की छोटी आयु में ही इन्हें अपने माता-पिता के साथ वेल्जियम, फ्रान्स और सयुंक्त राज्य अमरीका आदि देशों में भ्रमण करना पड़ा, जिससे इनका ज्ञान और अनुभव बहुत बढ़ गया। यह अरबी, अंगरेजी और फ्रांसीसी भाषाओं के बड़े विद्वान् थे और पहली दो भाषाओं पर तो इनको इतना अधिकार प्राप्त था कि इनकी समस्त रचनाएं इन्हीं भाषाओं में हैं। यह कवि, दार्शनिक और चित्रकार थे। अपनी रचनाओं और उग्र आलोचनाओं के कारण इनको अपने देश के पादरियों, जागीरदारों और अधिकारी वर्ग का कोप-भाजन बनना पड़ा, जिन्होंने इनको न केवल जाति से ही बहिष्कृत किया, बल्कि देश से भी निकाल दिया। फिर वह १९१२ ई० से संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क नगर में स्थायी रूप से रहने लगे।

खलील जिब्रान अद्भुत कल्पना-शक्ति रखते थे। और वह भारत के विश्वविख्यात महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की तुलना के थे। इन्होंने बारह वर्ष की अल्प आयु में ही अरबी में लिखना आरम्भ कर दिया था। इन्होंने लगभग पच्चीस पुस्तकें लिखीं, जो इनके अपने ही बनाए हुए चित्रों से सुसज्जित हैं। इनका संसार की बीस-बाईस प्रसिद्ध भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इससे उनके प्रशंसकों और पाठकों की संख्या का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। भारतवर्ष में हिन्दी, गुजराती, उर्दू और मराठी में उनकी बहुत-सी पुस्तकों का अनुवाद हो चुका है। यहां यह उल्लेखनीय है, कि उर्दू और मराठी में खलील जिब्रान की रचनाओं के सबसे अधिक अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। पर यह सन्तोष की बात है, कि हिन्दी-जगत में भी खलील जिब्रान बहुत प्रिय बन गये हैं। उनकी कई पुस्तकों के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

खलील जिब्रान एक महान् चित्रकार भी थे। और उनके चित्रों की संयुक्त राज्य अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस में कई प्रदर्शनियां हुईं, जिन-में प्रदर्शित चित्रों की नामी चित्र-आलोचकों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी।

यह ईसाई धर्म के अनुयायी थे, पर पादरियों और अंधविश्वासों के सदा कट्टर विरोधी रहे। यह महान् देशभक्त थे और अपने देशवासियों से इतने सताए जाने पर भी अपने देश के लिए सदा कुछ न कुछ लिखते रहे। अड़तालीस वर्ष की आयु में एक मोटर दुर्घटना में ये सख्त घायल हो गए और १० अप्रैल, सन् १९३१ में न्यूयार्क में इनका देहान्त हो गया। दो दिन तक इनके शव के अंतिम दर्शनों के लिए सहस्रों आदमियों के झुंड के झुंड आते रहे। इनका शव इनकी अपनी जन्मभूमि को वापस लाया गया और बड़ी शान और राजसी सम्मान के साथ इनके अपने नगर के एक गिरजाघर में दफन किया गया।

रेत और झाग

इन समुद्र-तटों पर मैं उनके रेत और झागों के बीच सदा के लिए चलता रहूंगा। निस्सन्देह समुद्र का चढ़ाव मेरे चरण-चिह्नों को मिटा देगा और हवा समुद्र के झागों को उड़ाकर ले जाएगी, परन्तु यह समुद्र और उसका तट सदा के लिए–अनंत काल तक के लिए–रहेंगे।

◇ ◇ ◇

एक वार मैंने अपनी मुट्ठी कुहरे से भरी। फिर जो उसे खोला, तो कुहरे को एक कीड़ा वना पाया।

मैंने दुवारा मुट्ठी वंद की और खोली, तो वहां कीड़े की जगह एक चिड़िया थी।

फिर मैंने उसे वंद किया और खोला, तो मेरी हथेली पर एक आदमी खड़ा था, जिसका चेहरा शोकातुर था और दृष्टि ऊपर की तरफ।

अन्तिम वार मैंने फिर मुट्ठी वन्द की और फिर जो उसे खोला, तो वहां कुहरे के सिवाय कुछ भी न था।

परन्तु इस वार मैंने एक अत्यन्त मधुर और रसीला गीत सुना।

◇ ◇ ◇

कल तक मेरा विचार था कि मैं एक सूक्ष्म टुकड़ा हूं, जो अनियमित रूप से जीवन के घेरे में चक्कर लगा रहा है। पर

आज मैं यह समझता हूं कि मैं स्वयं ही वह घेरा हूं जिसमें समस्त जीवन नियमित रूप से घूमनेवाले टुकड़ों के साथ चक्कर लगा रहा है।

◇ ◇ ◇

लोग अपनी जाग्रत अवस्था में मुझसे कहते हैं, "तू और यह संसार, जिसमें तू रहता है, एक अनन्त समुद्र के अनन्त तट का केवल रज कण मात्र है।"

और मैं अपनी स्वप्नमय अवस्था में उनसे कहता हूं, "मैं तो अनन्त समुद्र हूं और तीनों लोक मेरे तट पर रज के कण हैं।"

◇ ◇ ◇

मैं केवल एक वार ही निरुत्तर हुआ हूं। ऐसा भी तव ही हुआ, जवकि एक आदमी ने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो?"

◇ ◇ ◇

परमात्मा के सर्वप्रथम विचार में एक देवता था। पर परमात्मा के सर्वप्रथम वचन से मानव—इन्सान—ही निकला।

◇ ◇ ◇

समुद्र और जंगल की वायु से हमें वाणी मिलने से सहस्रों वर्ष पहले, हम इन्सान सृष्टि के फड़फड़ाते और घूमते हुए इच्छुक जीव मात्र थे।

जव ऐसी अवस्था हो, तो फिर हम अपनी पुरानी वातों को केवल कल के शब्दों में किस तरह वर्णन कर सकते हैं?

◇ ◇ ◇

स्फिंक्स[1] अपने जीवन में केवल एक वार ही वोला और तव उसने यही कहा, "एक रजकण मरुस्थल–सहरा–है और एक मरुस्थल रजकण है। अब हम सवको मौन धारण कर लेना चाहिए।"

मैंने उसकी वात सुनी तो अवश्य, पर मैं समझा कुछ भी नहीं।

◇ ◇ ◇

मैंने एक वार एक स्त्री के चेहरे पर नजर डाली और उसके उन सव वच्चों को देख लिया, जो अव तक पैदा भी नहीं हुए थे।

एक स्त्री ने मुझे देखा और उसने मेरे सभी पूर्वजों को जान लिया, यद्यपि वे उसके जन्म से पहले ही मर चुके थे।

◇ ◇ ◇

मैं चाहता हूं कि मैं अपने परम ध्येय की पूर्ति करूं। परन्तु यह कैसे हो सकता है, जव तक कि मैं स्वयं अपने आपको उस महानता में लीन न कर दूं, जो वुद्धिमान आदमियों के जीवन में पाई जाती है?

क्या यही महानता हर एक मानव का ध्येय नहीं है?

◇ ◇ ◇

---

१. यूनान के पौराणिक साहित्य में एक ऐसे राक्षस का उल्लेख है, जिसके पंख होते हैं और जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का होता है। इसके वारे में यूनान में कई कथाएं प्रसिद्ध हैं। इसे स्फिंक्स कहते हैं। मिस्र देश के प्राचीन साहित्य में भी स्फिंक्स नाम की मूर्ति का वर्णन है, जिसका शरीर शेर का और मुख स्त्री का वताया गया है।

मोती एक ऐसा मन्दिर है, जिसे दुःख और कष्ट के हाथों ने एक रजकरण के इर्दगिर्द निर्माण किया है।

तो फिर कौन-सी इच्छा ने हमारे शरीरों का निर्माण किया और वह कौन-से रजकरण हैं जिनके गिर्द हमारे शरीरों को वनाया ?

◇ ◇ ◇

जब परमात्मा ने मुझे एक छोटी-सी कंकरी के रूप में इस अद्भुत झील में फेंका, तो मैंने अनन्त घेरे वनाकर इसके तल की शांति में विघ्न डाल दिया।

पर जब मैं इसकी गहराइयों में पहुंचा तो मैं वहुत ही शांत हो गया।

◇ ◇ ◇

मुझे खामोशी प्रदान कर दो, फिर मैं रात को चुनौती देकर उससे वढ़ जाऊंगा।

◇ ◇ ◇

मेरा दूसरा जन्म उस समय हुआ, जव मेरी आत्मा और मेरे शरीर ने आपस में प्रेम किया और उन दोनों का सम्वन्ध हो गया।

◇ ◇ ◇

मेरा एक आदमी से परिचय हुआ, जिसकी सुनने की शक्ति वहुत तेज थी, पर वह गूंगा था। उसकी जिह्वा एक लड़ाई में जाती रही थी।

आज मैं उन सभी लड़ाइयों को जानता हूं, जो कि उस आदमी ने लड़ी थीं। इससे पहले कि वह महान् मौन उसे प्राप्त

हुआ, मैं प्रसन्न हूं कि वह मर गया है, क्योंकि यह संसार हम दोनों के लिए काफी नहीं है।

◇ ◇ ◇

मैं एक युग तक खामोश और ऋतुओं से अनभिज्ञ मिस्र देश की रेत में पड़ा रहा।

इसके वाद सूर्य ने मुझे जन्म दिया और मैं उठ खड़ा हुआ; और मैं दिनों में गाता हुआ और रातों में स्वप्न देखता हुआ नील नदी के किनारे-किनारे चलने लगा।

अव सूर्य अपनी सहस्रों किरणों से मुझपर आक्रमण कर रहा है, जिससे मैं दुवारा मिस्र की रेत में सो जाऊं।

पर यह कितनी अनोखी वात और पहेली है! जिस सूर्य ने मेरे जीवन तत्वों को इकट्ठा किया, अव वही उन्हें अलग-अलग नहीं कर सकता।

फिर भी मैं दृढ़ता और विश्वास के साथ नील नदी के किनारे चल रहा हूं।

◇ ◇

याद रखना भी मिलन का एक रूप है।

◇ ◇

भूल जाना भी स्वतंत्रता का एक रूप है।

◇ ◇

हम काल को असंख्य नक्षत्रों की चाल से मापते हैं। और दूसरे आदमी काल को उन छोटे-छोटे यन्त्रों से मापते हैं, जिन्हें वह अपनी जेवों में लिए फिरते हैं।

फिर तुम ही मुझे वताओ, कि मैं और वह दोनों एक ही स्थान पर एक ही समय में कैसे मिल सकते हैं?

◇ ◇ ◇

आकाश-गंगा के झरोखों में से देखनेवाले के लिए धरती और आकाश के बीच का लोक लोक नहीं है।

◇ ◇ ◇

मानवता प्रकाश की वह प्रवाहशील नदी है, जो अनादि से अनन्त की ओर बहती है।

◇ ◇ ◇

क्या देवलोक में रहनेवाली आत्माएं दुख और शोक के मारे इन्सान पर ईर्ष्या नहीं करतीं ?

◇ ◇ ◇

तीर्थस्थान को जाते हुए मेरी भेंट एक दूसरे यात्री से हुई। मैंने उससे पूछा, "क्या तीर्थ का ठीक रास्ता यही है ?"

उसने उत्तर दिया, "मेरे पीछे-पीछे चले आओ, एक दिन और एक रात में तुम तीर्थक्षेत्र पहुंच जाओगे ?"

मैं उसके पीछे-पीछे हो लिया। कई दिन और कई रात हम चलते रहे, फिर भी हम तीर्थक्षेत्र न पहुंचे।

मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह यात्री इस बात पर मुझपर क्रोध कर रहा है कि उसने मुझे ठीक रास्ते पर नहीं चलाया।

◇ ◇ ◇

परमात्मा ! इससे पहले कि तू खरगोश को मेरा शिकार बनाए, मुझे शेर का शिकार बना दे।

◇ ◇ ◇

रात के रास्ते में से होकर जाने के सिवा प्रभात तक कोई कैसे पहुंच सकता है?

◇ ◇ ◇

मेरा घर मुझसे कहता है, "मुझे मत छोड़ क्योंकि तेरा अतीत यहीं है।"

और मेरा रास्ता मुझसे कहता है, "मेरे पीछे-पीछे चला आ क्योंकि मैं तेरा भविष्य हूं।"

पर मैं अपने घर और रास्ते दोनों से कहता हूं, "मेरा न कोई अतीत है और न भविष्य। यदि मैं यहां ठहरूं, तो मेरे ठहरने में ही मेरा चलना है। और यदि मैं चलूं, तो मेरा चलना ही मानो मेरा ठहरना है। केवल प्रेम और मौत सब वस्तुओं को बदलते हैं।"

◇ ◇ ◇

मैं जीवन के न्याय पर से अपना विश्वास कैसे उठा दूं, जब कि मैं यह जानता हूं कि नरम-नरम मखमली गद्दों पर सोनेवालों के स्वप्न कठोर धरती पर सोनेवालों के स्वप्नों से अधिक मधुर नहीं होते?

◇ ◇ ◇

यह बड़ी ही विचित्र बात है कि कुछ सुखों की इच्छा ही मेरे दुःखों का अंश है।

◇ ◇ ◇

सात बार मैंने अपनी आत्मा को धिक्कारा है—

१—जब मैंने उसे बड़प्पन-प्राप्ति के लिए नरम होते देखा।

२—जब मैंने उसे पतितों के सामने झुककर चलते देखा।

३—जब उसे सरल और कठोर कामों में से किसी एक काम को चुनने का मौका दिया गया, और उसने सरल काम को पसन्द किया।

४—जब उसने कोई अपराध और पाप किया और यह कहकर अपने को संतोष दे लिया कि दूसरे भी उसकी ही तरह अपराध और पाप करते हैं।

५—जब उसने अपनी दुर्बलता के कारण किसी अत्याचार को सहन किया और फिर यह कहा कि संतोष और शांति धारण करना भी गुण हैं।

६—जब उसने किसी कुरूप चहरे को देखकर उससे घृणा की और यह न समझा कि वास्तव में यह उसका—मेरी आत्मा—का ही दूसरा रूप है।

७—जब उसने अपनी बड़ाई की डींग मारी या दूसरों की अनुचित प्रशंसा की और उसे भी एक गुण समझा।

◇ ◇ ◇

मैं 'पूर्ण सत्य' से अपरिचित हूं। पर मैं अपने अज्ञान के सामने नम्र बन जाता हूं और मेरे लिए इसीमें गर्व भी है और पुरस्कार भी।

◇ ◇ ◇

इन्सान की कल्पनाओं और उसकी पहुंच के बीच में अंतर है, जिसे केवल उसकी इच्छा ही पार कर सकती है।

◇ ◇ ◇

स्वर्ग इस द्वार के पीछे बराबरवाले कमरे में है, परन्तु उसकी कुंजी मेरे पास से खो गई है। नहीं-नहीं, शायद मैंने कहीं

दूसरे स्थान पर उसे रख दिया है।

◇ ◇ ◇

तुम अंधे हो और मैं बहरा और गूंगा। इसलिए आओ हम आपस में मिलें और संसार को समझें।

◇ ◇ ◇

मानव की प्रतिष्ठा और गौरव उस वस्तु से नहीं है, जिसे कि वह प्राप्त करता है, बल्कि उस वस्तु से है, जिसकी प्राप्ति के लिए वह तड़पता रहता है।

◇ ◇ ◇

हममें से कुछ स्याही के सदृश हैं और कुछ कागज के सदृश।

यदि हममें से कुछ में कालापन न होता, तो हममें से कुछ गूंगे ही बने रहते।

और यदि हममें से कुछ में सफेदी न होती, तो हम में से कुछ अंधे ही रह जाते।

◇ ◇ ◇

तुम जरा मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें बोलना सिखा दूंगा।

◇ ◇ ◇

हमारा मन अस्पन्ज के समान है, और हमारा हृदय एक नदी।

तो क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हममें से बहुत-से बहता रहने की अपेक्षा चूसने को अधिक पसन्द करते हैं?

◇ ◇ ◇

जब तुम उन वरदानों की इच्छा करते हो, जिनके नाम

तुम्हें मालूम न हों और जब तुम शोकातुर हो, पर अपने शोक का कारण न जानते हो, वास्तव में उस समय ही बढ़ती हुई वस्तुओं के साथ-साथ तुम भी बढ़ रहे हो और अपनी आत्मा की महानता की ऊंचाइयों की तरफ उठ रहे हो।

◇ ◇ ◇

जब इन्सान किसी विचार के नशे में चूर होता है, तब वह उसकी धुंधली अभिव्यक्ति को ही मदिरा कहने लगता है।

◇ ◇ ◇

तुम मदिरा इसलिए पीते हो कि तुम मस्त हो जाओ, और मैं मदिरा इसलिए पीता हूं कि वह मेरी दूसरी मस्तियों के नशे को कम कर दे।

◇ ◇ ◇

जब मेरा प्याला खाली होता है, तब तो मैं संतोष कर लेता हूं। पर जब वह आधा भरा होता है, तो मैं उसपर क्रोध करता हूं।

◇ ◇ ◇

इन्सान की वास्तविकता उन वस्तुओं में नहीं है, जिन्हें वह तुमपर प्रकट करता है, बल्कि उन वस्तुओं में है, जिन्हें वह तुमपर प्रकट नहीं कर सकता।

इसलिए यदि तुम इन्सान को समझना चाहते हो, तो जो कुछ वह कहता है, उसे मत सुनो, बलिक उन बातों को सुनो जिन्हें वह कह नहीं रहा है।

◇ ◇ ◇

जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, इसका आधा भाग निरर्थक

है, पर मैं इसको इसलिए कहता हूं कि दूसरा आधा भाग तुम्हारी समझ में आ जाए।

◇ ◇ ◇

आनन्दवृत्ति सन्तुलन की भावना के सदृश है।

◇ ◇ ◇

मेरे मन में एकान्तवास की इच्छा उस समय पैदा हुई, जब कि लोगों ने मेरे प्रकट दोषों की तो प्रशंसा की और मेरे अप्रकट गुणों की निंदा की।

◇ ◇ ◇

जब जीवन को अपने हृदय का गीत गानेवाला गायक नहीं मिलता, तभी वह किसी ऐसे दार्शनिक को जन्म देता है, जो उसके मन की बात कह सके।

◇ ◇ ◇

सत्य को जानना तो सदा चाहिए, पर उसको कहना कभी-कभी चाहिए।

◇ ◇ ◇

हममें जो सत् तत्व है, वह तो मौन रहता है, पर जो बाहर से प्राप्त किया हुआ तत्व है, वही बोलता रहता है।

◇ ◇ ◇

मेरे जीवन की आवाज तेरे जीवन के कानों तक नहीं पहुंच सकती। फिर भी हमें आपस में बातें करते ही रहनी चाहिएं, जिससे हम अकेलापन अनुभव न करें।

◇ ◇ ◇

जब दो स्त्रियां आपस में बातें करती हैं, तो वह कुछ भी

नहीं कहतीं, पर जब एक स्त्री बोलती है तो वह समस्त जीवन को प्रकट कर देती है।

◇ ◇ ◇

कभी-कभी मेढक बैलों से भी अधिक शोर कर सकते हैं, पर मेढक न खेत में हल चला सकते हैं, न कोल्हू में जोते जा सकते हैं और न तुम उनकी खाल से जूतियां ही बना सकते हो।

◇ ◇ ◇

बातूनी आदमी पर सिवाय गूंगे आदमी के और कोई दूसरा ईर्ष्या नहीं करता।

◇ ◇ ◇

यदि शीत ऋतु यह कहे कि वसंत ऋतु मेरे हृदय में है, तो उसकी बात कौन मानेगा ?

◇ ◇ ◇

हर एक बीज एक इच्छा के सदृश है।

◇ ◇ ◇

यदि तुम सचमुच आंखें खोलकर देखो तो तुम्हें प्रत्येक चहरे में अपनी आकृति दिखाई देगी।

और यदि अच्छी तरह कान खोलकर सुनो तो तुम्हें सभी वाणियों में अपनी वाणी सुनाई देगी।

◇ ◇ ◇

सत्य की खोज करने के लिए दो आदमी चाहिएं, एक इसको कहनेवाला और दूसरा उसे समझनेवाला।

◇ ◇ ◇

हम शब्दों की लहरों में हर समय डूबे रहते हैं, पर हमारा

अंतरंग सदा चुप रहता है।

◇ ◇ ◇

बहुत-से मत-मतान्तर खिड़की के शीशों के सदृश हैं। हम उनमें से सत्य को देखते तो हैं, पर वे हमें सत्य से अलग ही रखते हैं।

◇ ◇ ◇

आओ, हम आंख-मिचौनी का खेल खेलें और एक दूसरे को ढूंढ़ें। यदि तुम मेरे हृदय में छुपो तो तुम्हें ढूंढ़ना मेरे लिए कठिन न होगा। पर यदि तुम अपने ही तन में छुप गए तो मेरे लिए तुमको ढूंढ़ना ही व्यर्थ होगा।

◇ ◇ ◇

एक स्त्री अपने चेहरे के भावों को एक हल्की-सी मुस्कराहट के परदे से ढक सकती है।

◇ ◇ ◇

वह दुःखी हृदय भी कितना श्रेष्ठ है, जो दूसरे प्रसन्नचित्त मनुष्यों के साथ आनन्दपूर्ण गीत गा सकता है।

◇ ◇ ◇

जो आदमी एक स्त्री को समझ सकता है, एक प्रतिभाशाली मनुष्य की सूक्ष्म परीक्षा कर सकता है और मौन के रहस्य का पता लगा सकता है, वास्तव में वही आदमी एक मधुर स्वप्न से जागकर प्रातःकाल कलेवे के लिए बैठता है।

◇ ◇ ◇

मैं सभी चलनेवालों के साथ चलूंगा और अवश्य चलूंगा। पर मैं पास से जानेवाले आदमियों की भीड़ का तमाशा देखने

के लिए निश्चल खड़ा नहीं रहूंगा ।

◇　　　　◇　　　　◇

जो आदमी तुम्हारी सेवा करता है, तुम स्वर्ण से भी मूल्यवान पदार्थ के लिए उसके ऋणी हो । इसलिए या तो उसे अपना हृदय दो या उसकी सेवा करो ।

◇　　　　◇　　　　◇

हां ! हमारे जीवन व्यर्थ नहीं बीते । क्या ये वैभवशाली स्तम्भ लोगों ने हमारी हड्डियों से निर्माण नहीं किए ?

◇　　　　◇　　　　◇

न तो हमें किसी विशेष व्यक्ति का अन्धा अनुयायी बनना चाहिए और न किसी सम्प्रदाय विशेष का अनुयायी । कवि की कल्पना और बिच्छू का डंक एक ही धरती से उठकर बड़ाई पाते हैं ।

◇　　　　◇　　　　◇

प्रत्येक सांप एक संपालिया पदा करता है, जो बड़ा होकर उसीको खा जाता है ।

◇　　　　◇　　　　◇

वृक्ष वह कविताएं हैं, जिन्हें पृथ्वी आकाश के पन्नों पर लिखती है । पर हम इन्हें काटकर इनसे कागज बनाते हैं, जिससे हम उनपर खोखले विचारों को लिख सकें ।

◇　　　　◇　　　　◇

जब तुम अपने हृदय में कुछ लिखने की प्रेरणा अनुभव करो (और इस प्रेरणा का ज्ञान सिवाय अन्तर्यामी के और किसीको नहीं होता) तो तुम्हारे भीतर तीन बातें होनी

चाहिएं; ज्ञान, कला और मोहिनी जादू।

शब्दों के संगीत का ज्ञान,
कलाहीन होने की कला,
और श्रोताओं को मोह लेनेवाला जादू।

◇ ◇ ◇

कवि हमारे हृदयों के खून में अपनी लेखनी डुबोते हैं और फिर समझते हैं कि उन्हें अंतः प्रेरणा हुई है।

◇ ◇ ◇

यदि एक वृक्ष अपनी आत्मकथा लिख सकता, तो वह किसी जाति के इतिहास से भिन्न न होती।

◇ ◇ ◇

मुझे यदि कविता लिखने की शक्ति और अलिखित कविता के आनन्द में से किसी एक को चुनने का अवसर मिले, तो निस्सन्देह मैं आनन्द लेना अधिक पसन्द करूंगा, क्योंकि वह कविता से बेहतर है।

पर तुम और मेरे सभी पड़ोसी इस बात पर सहमत हैं कि मैं अच्छी वस्तु को छोड़कर बुरी वस्तु पसन्द करता हूं।

◇ ◇ ◇

कविता कोई मत या दृष्टिकोण नहीं है, जिसे शब्दों में प्रकट किया जा सके। यह तो वह गीत है, जो किसी खून बहते हुए घाव से या मुस्कराते हुए मुख से निकलता है।

◇ ◇ ◇
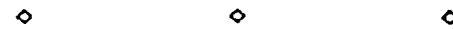
शब्द काल के बन्धन से स्वतन्त्र हैं। इसलिए उनको कहते या लिखते समय तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए।

◇ ◇ ◇
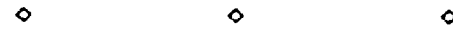
एक कवि सिंहासन से उतारे हुए राजा के सदृश है, जो अपने महल की राख पर बैठा इससे अनेक प्रकार की मूर्तियां बना रहा है।

◇ ◇ ◇

आनन्द, वेदना और आश्चर्य के रस में कुछ शब्दों को समो देना ही कविता है।

◇ ◇ ◇

कवि अपने हृदय के गीतों के निकास को ढूंढ़ने का प्रयत्न व्यर्थ करता है।

◇ ◇ ◇

एक बार मैंने एक कवि से कहा, "हम तुम्हारा महत्व तुम्हारे मरने के बाद तक न जानेंगे।"

उसने उत्तर दिया, "हां, मृत्यु ही यथार्थता को सदा प्रकट करती है। और यदि तुम वास्तव में मेरा मूल्य जानना चाहते हो, तो इसका कारण यही है कि जो कुछ मेरी जीभ पर है, उससे कहीं अधिक मेरे हृदय में है, और जो कुछ मेरे हाथ में है, उससे कहीं अधिक मेरी तमन्नाओं में है।"

◇ ◇ ◇

यदि तुम सौन्दर्य के गीत गाओगे, तो उनको सुननेवाला तुम्हें अवश्य मिल जाएगा, चाहे तुम सहरा के बीच में ही क्यों न गाओ।

◇ ◇ ◇

कविता वह दर्शन है, जो हृदयों को मोह लेता है। और दर्शन वह कविता है, जो मन में गाता है। यदि हम दोनों का

समन्वय कर सकें, और एक ही समय में मनुष्य के हृदय को मोह भी सकें और उसके मन में गा भी सकें, तो सचमुच वह परमात्मा की छाया में जीवन विताने लगे।

◇ ◇ ◇

अंतः प्रेरणा के गीत सदा गाए जाते हैं, अंतः प्रेरणा की व्याख्या नहीं की जाती।

◇ ◇ ◇

हम प्रायः बच्चों को सुलाने के लिए लोरी गाते हैं, जिससे कि हम स्वयं सो सकें।

◇ ◇ ◇

हमारी सब कविताएं रोटी के ऐसे कौर हैं, जो कल्पनाशील मन के भोजन से गिरते हैं।

◇ ◇ ◇

विचार और चिंतन कविता के रास्ते में बड़ी रुकावट है।

◇ ◇ ◇

सबसे बड़ा गायक वह है, जो हमारे मौन के गीत गाता है।

◇ ◇ ◇

तुम्हारा पेट तो भरा हुआ है, फिर तुम कैसे गा सकते हो?

तुम्हारे हाथ तो रुपयों से भरे हुए हैं, फिर वे परमात्मा की वन्दना के लिए कैसे उठ सकते हैं?

◇ ◇ ◇

कहा जाता है, कि बुलबुल जब प्रेमभरे गीत गाती है, तो पहले अपने हृदय को कांटे से चीर डालती है।

हमारा भी यही हाल है। नहीं तो, हम प्रेम के गीत कैसे गा सकते हैं?

◇ ◇ ◇

प्रतिभा एक गीत है, जिसे पक्षी बड़ी प्रतीक्षा के बाद आनेवाली वसन्त ऋतु के आने पर गाता है।

◇ ◇ ◇

महात्मा भी शारीरिक आवश्यकताओं से छुटकारा नहीं पा सकते।

◇ ◇ ◇

एक पागल भी मेरे और तुम्हारे से कम गवैया नहीं है। अन्तर केवल यही है कि जिन बाजों को वह बजाता है, वे कुछ बेसुरे हैं।

◇ ◇

मां के हृदय की खामोशियों में सोया हुआ गीत उसके बच्चे के होंठों पर खेलता है।

◇ ◇ ◇

इस संसार में ऐसी कोई इच्छा नहीं है, जो पूरी न हो सके।

◇ ◇ ◇

मैं अपनी अन्तरात्मा से कभी पूरे रूप से सहमत नहीं हुआ हूं। मालूम होता है कि यथार्थ बात कहीं हम दोनों के बीच में है।

◇ ◇ ◇

तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हारे लिए सदा दुःख मानती रहती है। पर यह दुःख ही उसको पुष्ट करनेवाला भोजन है। इसलिए यह सब ठीक ही है।

◇ ◇ ◇

आत्मा और शरीर का संघर्ष उन आदमियों के हृदयों के सिवाय और कहीं नहीं है, जिनकी आत्माएं सो रही हैं और जिनके शरीर ताल-स्वर-हीन हैं।

◇ ◇ ◇

यदि तुम जीवन की तह तक पहुंच जाओ, तो तुम्हें हर एक वस्तु में सौन्दर्य दिखाई देगा। यहां तक कि उन आंखों में भी जो सौन्दर्य को देखने में असमर्थ हैं।

◇ ◇ ◇

सौन्दर्य हमारी खोई हुई पूंजी है, जिसे हम समस्त जीवन खोजते रहते हैं। इसके सिवा सब कुछ प्रतीक्षा की एक न एक विधि है।

◇ ◇ ◇

बीज डालो। धरती तुम्हारे लिए फूल पैदा करेगी। अपने स्वप्नों की आकाश में तलाश करो। आकाश तुम्हें तुम्हारी प्रेयसी से मिला देगा।

◇ ◇ ◇

शैतान तो उसी दिन मर गया, जिस दिन तुम जन्मे थे। अब तुम्हें देवताओं के दर्शन के लिए नर्क में से गुजरने की क्या आवश्यकता ?

◇ ◇ ◇

बहुत-सी स्त्रियां पुरुषों का मन मोह लेती हैं, पर विरले

ही स्त्रियां उनको अपने वश में रख सकती हैं।

◇ ◇ ◇

यदि तुम किसी वस्तु को लेना चाहते हो, तो उसके लिए दावा मत करो।

◇ ◇ ◇

पुरुष जब एक स्त्री के हाथ को छूता है, तो वे दोनों अनन्त की आत्मा को छूते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रेम दो प्रेमियों के बीच में एक परदा है।

◇ ◇ ◇

हर एक पुरुष दो स्त्रियों से प्रेम करता है। एक वह स्त्री जिसकी रचना उसकी कल्पना करती है और दूसरी वह जिसने अभी तक जन्म नहीं लिया है।

◇ ◆ ◇

जो पुरुष स्त्रियों के छोटे-छोटे अपराधों को क्षमा नहीं करते, वे उसके महान् गुणों का सुख नहीं भोग सकते।

◇ ◇ ◇

जो प्रेम नित नया नहीं होता रहता, वह एक आदत का रूप धारण कर लेता है और फिर बंधन बन जाता है।

◇ ◇ ◇

दो प्रेमी आलिंगन करते समय एक दूसरे का इतना आलिंगन नहीं करते जितना कि वे अपने बीच की किसी वस्तु का आलिंगन करते हैं।

◇ ◇ ◇

प्रेम और सन्देह में आपस में कभी मेलजोल नहीं हो

सकता। वे दोनों एक हृदय में नहीं रह सकते।

◇ ◇ ◇

प्रेम एक दिव्य शब्द है, जिसे प्रकाशपूर्ण हाथ ने ज्योतिर्मय पृष्ठ पर लिखा है।

◇ ◇ ◇

मित्रता सदा एक मधुर उत्तरदायित्व है, न कि स्वार्थ-पूर्ति का अवसर।

◇ ◇ ◇

यदि तुम अपने मित्र को सब परिस्थितियों में नहीं जान सकते, तो तुम उसे कभी नहीं समझ सकोगे।

◇ ◇ ◇

तुम्हारे सुन्दरतम वस्त्र किसी दूसरे आदमी के बुने हुए हैं।

तुम्हारे स्वादिष्ट भोजन वे हैं, जो तुमने किसी दूसरे की रसोई में खाए हैं।

तुम्हारा अत्यन्त सुखदायक बिस्तर वह है, जिसपर तुम किसी दूसरे के घर में सोए हो।

फिर तुम ही बताओ, तुम अपने आपको दूसरे आदमी से कैसे अलग कर सकते हो?

◇ ◇ ◇

तुम्हारी बुद्धि और मेरे हृदय में उस समय तक मेल नहीं हो सकता, जब तक कि तुम्हारी बुद्धि हिसाब लगाना न छोड़ दे और मेरा हृदय अन्धकार में रहना।

◇ ◇ ◇

हम एक दूसरे को उस समय तक नहीं समझ सकते,

जब तक कि हम भाषा को सात शब्दों[1] में सीमित न कर दें।

◇ ◇ ◇

मेरे हृदय की बात कैसे प्रकट हो सकती है, जब तक कि उसकी मुहरें न टूटें ?

◇ ◇ ◇

तुम्हारी यथार्थता को केवल महान दुःख या महान सुख ही प्रकट कर सकता है।

इसलिए यदि तुम अपनी यथार्थता को प्रकट करना चाहते हो, तो या तो तुम्हें नग्न होकर दिन में नाचना होगा, या फांसी पर चढ़ना होगा।

◇ ◇ ◇

यदि प्रकृति हमारे संतोष के उपदेश सुन ले, तो न कोई दरिया समुद्र तक जा पाएगा और न शीत ऋतु वसंत में ही बदलेगी।

और यदि वह हमारी मितव्ययिता की सब बातें सुन ले, तो हममें से कितने इस वायु में सांस ले सकेंगे ?

◇ ◇ ◇

जब तुम सूर्य की ओर पीठ फेर लेते हो, तब तुम अपनी परछाईं के सिवा और क्या देख सकते हो ?

तुम दिन के सूर्य के सामने भी स्वतंत्र हो।

तुम रात के चांद-तारों के सामने भी स्वतंत्र हो।

---

१. वे सात शब्द ये हैं—तुम, मैं, लो, परमात्मा, प्रेम, सुन्दरता, धरती। देखें—बारबैरा यंग रचित 'दिस मैन फ्राम लेबनान', पृ० ६१.।

और तुम तब भी स्वतंत्र हो, जब न सूर्य है और न चांद-तारे।

संसार की सब वस्तुओं की तरफ से आंखें बंद कर लेने पर भी तुम स्वतंत्र हो।

पर तुम उस आदमी के सामने गुलाम हो, जिसे तुम प्रेम करते हो, क्योंकि तुम उससे प्रेम करते हो।

और तुम गुलाम हो उस आदमी के सामने, जो तुम्हें प्रेम करता है, क्योंकि वह तुम्हें प्रेम करता है।

◇ ◇ ◇

मन्दिर के द्वार पर हम सब भिखारी हैं।

और जब हम मन्दिर में प्रवेश करते हैं और बाहर आते हैं, तो, हममें से हर एक आदमी संसार के सम्राट्—परमात्मा—से अपना-अपना अंश, हिस्सा लेकर चला आता है।

फिर भी हम एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। हमारा यह व्यवहार उस सम्राट् को तुच्छ समझने का ही एक दूसरा ढंग है।

◇ ◇ ◇

तुम अपनी भूख से अधिक नहीं खा सकते। इसलिए जो आधी रोटी तुमने नहीं खाई है, वह किसी दूसरे का हिस्सा है। और हां, तुम्हें कुछ रोटी अकस्मात् आ जाने वाले अतिथि के लिए भी रखनी चाहिए।

◇ ◇ ◇

यदि अतिथि न होते तो सब घर कब्रें बन जाते।

◇ ◇ ◇

एक दयालु भेड़िए ने एक भोली भेड़ से कहा, "क्या आप दर्शन देकर हमारे घर की शोभा न बढ़ाएंगी ?"

भेड़ ने उत्तर दिया, "आपके घर आना हमारे लिए बड़े सौभाग्य और गर्व की बात होती, यदि वह घर आपके पेट में न होता।"

◇ ◇ ◇

मैंने द्वार पर अपने अतिथि को रोककर कहा, "मेरे घर में भीतर प्रवेश करते समय अपने पांव न झाड़िए, जब आप जाएंगे, तब अपने पांव झाड़िए।"

◇ ◇ ◇

दानशीलता यह नहीं है कि तुम मुझे वह वस्तु दो, जिसकी आवश्यकता मुझे तुमसे अधिक है। वरन यह है कि तुम मुझे वह वस्तु दो जिसकी आवश्यकता तुम्हें मुझसे अधिक है।

◇ ◇ ◇

तुम निस्सन्देह बड़े दयालु और दानी हो, जब तुम किसी की आवश्यकता पूरी करते हो।

पर ध्यान रहे कि दान देते समय अपना मुंह दान लेने वाले की ओर से परे फेर लिया करो, जिससे कि तुम लेने वाले की झिझक और लज्जा को न देखो।

◇ ◇ ◇

अत्यन्त धनी और अत्यन्त निर्धन में एक दिन की भूख और एक घड़ी की प्यास का अन्तर है।

◇ ◇ ◇

हम प्राय: पुराना ऋण उतारने के लिए नया ऋण लेते हैं।

◇ ◇ ◇

मेरे पास देवता भी आते हैं और शैतान भी, पर मैं दोनों से छुटकारा पा लेता हूं।

जब कोई देवता आता है, तो मैं कोई पुरानी प्रार्थना पढ़ने लगता हूं और वह उकताकर मेरे पास से चला जाता है।

और जब कोई शैतान आता है, तो कोई पुराना पाप करने लगता हूं और वह मेरे पास से गुजर जाता है।

◇ ◇ ◇

यह कैदखाना कोई बुरा कैदखाना नहीं है। पर मैं अपनी कोठरी और दूसरे कैदी की कोठरी के बीच यह दीवार पसंद नहीं करता।

तो भी मैं तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूं कि न मैं कैद-खाने के पहरेदार के सर बुराई मढ़ना चाहता हूं और न कैद-खाने के निर्माता के।

◇ ◇ ◇

जो लोग तुम्हें रोटी मांगने पर पत्थर देते हैं, हो सकता है कि उनके पास देने के लिए पत्थर ही हों। तो उनकी यह भी दानशीलता ही है।

◇ ◇ ◇

पापाचार कभी-कभी सफल हो जाता है, पर उसका फल घातक ही होता है।

◇ ◇ ◇

वाह ! तुम्हारी उस क्षमाशीलता का क्या कहना है,

जो,

उन घातकों को क्षमा कर दे, जिन्होंने खून की एक बूंद भी नहीं गिराई।

उन चोरों को दंड न दे, जिन्होंने एक तिनका भी न चुराया।

और उन झूठों को कुछ न कहे, जिन्होंने झूठ का एक शब्द भी नहीं कहा।

◇ ◇ ◇

जो आदमी भलाई को बुराई से अलग करनेवाली रेखा पर अंगुली रख सकता है, निस्सन्देह वही आदमी परमात्मा के चरणों को छू सकता है।

◇ ◇ ◇

यदि तेरे हृदय में ज्वालामुखी धधक रही है, तो तुम अपने हाथों में फूलों के खिलने की आशा कैसे करते हो ?

◇ ◇ ◇

आत्मअनुग्रह का यह भी विचित्र ढंग है कि कभी-कभी मैं अपने आपको लोगों के अत्याचार और धोखे का शिकार इसलिए बनाना चाहता हूं कि मैं उन लोगों की बुद्धि पर हंस सकूं, जो यह समझते हैं कि मैं अपने साथ होनेवाले अत्याचार और धोखे को नहीं समझता।

◇ ◇ ◇

मैं उस खोजी के बारे में क्या कहूं, जो स्वयं ही परमात्मा का स्वांग भर रहा है।

अपने कपड़े उसको दे दो, जो अपने हाथ उनसे पोंछता है। सम्भव है, उसे उनकी फिर आवश्यकता हो जाए, पर तुम्हें तो अब इनकी आवश्यकता होगी ही नहीं।

◇ ◇ ◇

यह बड़े ही खेद की बात है कि सर्राफ लोग अच्छे माली नहीं बन सकते।

कृपा करके अपने स्वाभाविक दोषों को अपने प्राप्त गुणों से मत छुपाओ। मैं तो अपने दोषों को भी रखना चाहूंगा, क्योंकि आखिर वे मेरे अपने ही तो हैं।

◇ ◇ ◇

बहुत बार मैंने अपने आपको उन अपराधों का दोषी ठहराया है, जो मैंने स्वप्न में भी नहीं किए, जिससे मेरे पास बैठनेवाला अपराधी भी मेरी संगति में अपने को मुझसे हीन न समझे।

◇ ◇ ◇

जीवन के परदे ही उससे भी गहरे रहस्य के परदे हैं।

◇ ◇ ◇

तुम अपने आत्मज्ञान के अनुसार ही दूसरों के गुण-दोषों का निर्णय कर सकते हो।

पर अब मुझे बताओ तो सही कि हममें कौन अपराधी है और कौन निरपराध।

◇ ◇ ◇

वह आदमी वास्तव में न्यायवान है, जो तुम्हारे अपराधों के लिए अपने आपको आधा अपराधी अनुभव करता है।

◇ ◇ ◇